Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

Original Article

अंधेर नगरी का तात्विक विवेचन

डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

सहयोगी प्राध्यापक (हिंदी),

विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

Manuscript ID:
yrj-150112

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 7.025

Volume 15
Issue 1
Jan-Feb-Mar.- 2026
Pp. 77 – 85

Submitted: 17 Jan. 2026
Revised: 30 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 10 Mar. 2026

Corresponding Author:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.22641530

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.22641530

नाटक साहित्य की जिवंत विधा मानी जाती है। नाट्य लेखन के अंतर्गत 'तत्व' वह आधारभूत स्तंभ है जिनके उचित अथवा योग्य संयोजन से कोई रचना 'नाटक' के रूप में साकार हो उठती है। तत्वं से तात्पर्य वहा घटक या बिंदु जिनके आधार पर कोई नाटककार एक सफल नाट्यकृति का सृजन करता है। संस्कृत आचार्यों ने कथावसु, पात्र एवं चरित चित्रण, देशकाल वातावरण, संवाद या कथोपकथन, भाषा शैली, उद्देश्य आदि को नाट्य लेखन के मूलभूत तत्त्वों के रूप में स्वीकृती प्रदान की है। इन तत्वों का उचित समाहार जिस रचना में होता है वहीं रचना 'नाटक' विधा के अंतर्गत आती है। कथावस्तु से लेकर उद्देदश्य तक विविध बिंदुओं से गुजरता हुआ नाटक पूर्णत्व की ओर बढ़ता है। किसी नाटक की समीक्षा इन्हीं तत्वों के आधार पर की जाती है। नाटककार यदि इन तत्वों का उचित प्रयोग अपनी रचना में न करे या इनकी ओर अनेदखा कर दे तो संबंधित रचना 'नाटक' की श्रेणी में नहीं आएगी। एक सफल तथा सोद्देश्यपूर्ण नाटक लेखन के लिए नाट्य लेखन तत्वों का अध्ययन, विवेचन तथा समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे. (2026). अंधेर नगरी का तात्विक विवेचन. Young Researcher, 15(1), 77 – 85. https://doi.org/10.5281/zenodo.22641530

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'अंधेर नगरी' हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय तथा श्रेष्ठ नाटकों में से एक है। 'अंधेर नगरी' जैसी कालजयी रचना न केवल समाज की वास्तविक छवि को चित्रित करती है बल्कि यह लेखक की नाट्यलेखन प्रतिभा का भी प्रमाण है। सामाजिक विसंगतियों को प्रभावी शब्दों में अधोरेखित करता 'अंधेर नगरी' नाट्यशिल्प की दृष्टि ये भी बेजोड है। भारतेंदु दवारा 'नाटक' शिर्षक ये लिखित निबंध में ही हमें उनकी नाट्य प्रतिभा का परिचय मिल जाता है। जिसके वास्तविक दर्शन आलेच्य नाटक के माध्यम से होते हैं। एक लेखक की नाटकीय सूझ-बूझ का अनुमान नाटक के शिल्प पक्ष के अध्ययन से लगाया जाता है। नाटक का तात्विक विवेचन कर शिल्प पक्ष को समझना प्रस्तुत इकाई क प्रमुख उद्देश्य है।

कथावस्तु:

'कथावस्तु नाटक का सर्वप्रथम एवं महत्त्वपूर्ण तत्व है जिसका संबंध नाटक में वर्णित विषय से होता है। विषय का संबंध कल्पना, इतिहास, जीवन और जगत की विविध घटनाओं, विचारों आदि से होता है। कथावस्तु ही वह बिंदु है जिस आधार पर रचना के आरंभ, मध्य और अंत का ताना-बाना बुना जाता है। छः दृश्यों में विभाजित 'अंधेर नगरी' की कथावस्तु लोक कथा पर आधारित है। युग प्रवर्तक नाटककर भारतेंदु ने नाटकीय सूझ-बूझ तथा कल्पनाशक्ति के माध्यम से एक संक्षिप्त कथानक को तत्कालीन समय की मांग के अनुसार समय की मांग के अनुसार बड़ी ही कुशलता ये ढाला है। विवेकहीन शासन व्यवस्था, सामाजिक मूल्यों का पतन, भ्रष्टाचार, विवेकहीन समाज, विदेशी संस्कृति की चमक-दमक के आगे दम तोड़ती भारतीय संस्कृति, जन-चेतना जागृति आदि का सहज चित्रण अंधेर नगरी' की कथावस्तु की विशेषता है।

नगर के बाहर की सड़क के दृश्य से लेकर श्मशान के दृश्य तक पाई जानेवाली एकसूत्रता भी प्रस्तुत नाटक के कथ्य की विशेषता है। कुथारुपी प्रवाह धीरे- धीर आगे बढ़ता हुआ अंत की और पहुंचता है। कथा में किसी प्रकार का कोई अवरोध नहीं है। प्रथम दृश्य में नगर के बाहय प्रांत में एक और उनके दो शिष्य नारायणदाय तया गोवर्धनदास नगर के भीतर प्रवेश करते हैं। नगर में फैली अव्यवस्था को देखते हुए महंत अपने शिष्यों को यहां से चलने की सलाह देते है परंतु गोवर्धनदास नगर की चकाचौंध से आकर्षित होकर यही रुक जाता है। दूसरा दृश्य बाज़ार का है जो अंधेर नगरी में फैली अराजकता का प्रतीक है। तीसूरा दृश्य जंगल का है जहाँ महंत और उनके दोनों शिष्यों की पुनः भेट होती है। अब भी गोवर्धनदास अंधेर नगरी में में रुकने के निश्चय पर अडिग है।महंत और नारायणदास वहां ये प्रस्थान करते हैं।

चौथा दृश्य राजसभा का है। एक फरियादी को न्याय दिलाने की असफल कोशिश चौपट राजा तथा उसके दरबारियों दवारा की जा रही है। बकरी की मौत के जिम्मेदार के रूप में क्रमशः कुल्लू बनिया, कारीगर, चुना बनानेवाला, भिश्ती, कसाई, गडरिया आदि से होते हुए कोतवाल और अंत में गोवर्धनदास को राजा दवारा फाँसी की सजा सुनाई जाती है। पांचवां दृश्य जंगल का है जहां गोवर्धनदास बडे ही आनंद मे गीत गुनगुना रहा है-

" साँचे मारे मारे डाल
छली दुष्ट सिर चढि चढि बोलैं

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

सांच कहैं ते पनही खावैं
झूठे बहुविधि पदवी पावैं
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा
मानहुँ राजा रहत बिदेसा
ऊंच नीच सब एकहि सारा
मानहुँ ब्रहम ज्ञान बिस्तारा
अंधेर नगरी अनबुझ राजा
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।"[१]

तभी वहां राजा के सिपाही आकर गोवर्धनदास को पकडकर ले जाते हैं। बिना किसी जुर्म के सीधे फाँसी की सजा पानेवाला गोवधनदास पछताते हुए अपने गुरु और उनकी बातों का स्मरण करने लगता है।

अंतिम दृश्य स्मशान का हैं जहां पर महंत अपनी बुद्धि तथा व्यावहारिक सूझबूझ के आधार पर गोवर्धनदास को फांसी पर चढ़ने से बचा लेते है। बैकुंठ जाने की लालसा में स्वयं राजा ही फाँसी पर चढ़ जाता है। इस प्रकार राजा की मृत्यू के साथ प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु का भी अंत होता है। हास्य के आवरण में छिपा तीखा व्यंग्य कथा प्रवाह के साथ बढ़ता चला जाता है। आलोच्य नाटक की कथावस्तु में छिपा जिज्ञासा का भाव आरंभ से अंत तक पाठक को बांधे रखता है।

नाटक में चित्रित सभी दृश्यों में सुस्पष्टता तथा निरंतरता दिखाई देती है। नाटक की कथा में तारतम्यता तथा जिज्ञासा का गुण भी विद्यमान है। पाठक आरंभ से लेकर अंत तक कथावस्तु में स्थित जिज्ञासा से बंधा रहता है। प्रत्येक दृश्य परस्पर संबंद्धता के कथा को प्रवाहित करता दिखाई देता है। अंधेर नगरी में चित्रित घटनाएं एक के बाद एक बड़ी ही सरलता से पाठक के सामने से गुजरती चली जाती है। भारतेंदु के मतानुसार -"नाटक की कथा की रचना ऐसी होनी चाहिए कि जब तक अंतिम अंक न पढे किम्बा न देखै यह न प्रकट हो कि खेल कैसे समाप्त होगा।"

इस कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, भारतेंदु स्वयं स्पष्ट रूप से नाटक की कथावस्तु में समाहित जिज्ञासा, रोचकता और सुसंबद्धता आदि की ओर संकेत करते हैं। इन सभी बिंदुओं का समावेश 'अंधेर नगरी' की कथावस्तु को और भी अधिक प्रभावी बनाता है। कथा के अंत में पाठक चौपट राजा के अंत के कारणों और महंत की सूझ-बुझ पर विचार करता है। अतः प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु में रोचकता, सहजता, स्पष्टता, जिज्ञासा और प्रभाव जैसे सभी गुण विद्यमान है।

पात्र अथवा चरित्र -चित्रण:

नाटक की कथावस्तु को गति प्रदान करने का कार्य पात्र अथवा चरित्र ही करते हैं। पात्रों के माध्यम से ही कोई नाटककार अपनी रचना के उद्देश्य को पाठकों तक पहुंचाने में सफल होता है। इस दृष्टि से नाटक के पात्रों का सहज एवं स्वाभाविक होना आवश्यक होता है। साथ ही पात्रों का जीवन और जगत से व्यवहार पाठकों तथा पर्यायी रूप से दर्शकों के लिए सहज कल्पनीय होना भी अनिवार्य माना गया है। इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए भारतेंदु ने अंधेर नगरी नगरी में में पात्रों की सृष्टि सुनियोजित, सोद्देश्यपूर्ण ढंग से की है। प्रस्तुत नाटक के सभी पात्र निश्चित उद्देदश्य को ध्यान में रखकर गढे गए है। नाटक में चित्रित प्रमुख पात्र महंत, गोवर्धनदास, राजा आदि के अतिरिक्त नारायणदास, राजदरबार के मंत्री,

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

सैनिक, कबाबवाला, पाचकवाला, हलवाई, कुंजडिन, घसीराम चुनेवाला, कुल्लू, कारीगर, चनेवाला, भिश्ती, कसाई, गडरिया, कोतवाल आदि कई गौण पात्र है। आलोच्च नाटक के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को निम्नप्रकार देखा जा सकता है-

- **महंत:**

प्रस्तुत नाटक में महंत की उपस्थिति, एक प्रभावी चिंतक के रूप में सामने आती है। वे गोवर्धनदास के गुरु है। एक ऐसे गुरु जो अपने शिष्य को भले-बुरे में अंतर करते हुए लोभी और संकुचित मनोवृत्ति से उपर उठने का ज्ञान देते हैं-

"लोभ पाप को मूल है
लोभ मिटावत मान
लोभ कभी न कीजिए
यामै नरक निदान।"[२]

अंधेर नगरी में फैली अराजकता को भांपकर वे गोवर्धनदास को सचेत भी करते हैं-

" सेत सेत सब एक से
जहां कपूर कपास
ऐसे देस कुदेस में
कबहू न कीजै बास।"[३]

दूरदृष्टि तथा विवेक से संपन्न महंत विकट स्थिति पर भी मात करने की योग्यता रखते है। महंत का चरित्र पाठकों को आशावाद की आर मुडने लिए लिए प्रेरित करता है। नाटक के के अंत में गोवर्धनदास को भी अपने गुरु की सीख का एहसास होता है। महंत का चरित्र व्यावहारिक सूझबूझ का प्रमाण है। साथ ही विवेकसंपन्नता के माध्यम से महंत जैसा एक सर्वसामान्य व्यक्ति भी अंधेर नगरी रुपी कुशासन से जनता को मुक्त कर सकता है यह संदेश भी भारतेंदु ने बड़ी सहजता से संप्रेषित किया है।

- **गोवर्धनदास:**

अंधेर नगरी' के प्रमुख पात्रों में गोवर्धनदास का नाम लिया जाता है। नाटक आरंभ से लेकर अंत तक गोवर्धनदास के इर्द-गिर्द घूमती हुई दिखाई देती है। गोवर्धनदास उस सामान्य भारतीय व्यक्ति का प्रतीक है जो लालच एवं लाभ तथा स्वार्थ के कारण शोषण का शिकार है जो अंधविश्वास, आलस्य, मुर्खता के कारण शोषकों के चंगुल में फंसी हुई है। इस पात्र के माध्यम से लोगों में बढ़ती स्वार्थी प्रवृत्ति को रुपायित करने का कार्य भारतेंदु ने किया है। स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण गोवर्धनदास अंधेर नगरी में फैले असंतोष को समझ नहीं पाता। वह स्वार्थी मानसिकता ये इतना ग्रसित है कि अपने गुरु द्वारा समझाएं जाने पर भी उस पर कोई असर नहीं होता। परंतु संकट के समय अपने गुरु की बातों को याद कर पश्च्याताप की अग्नि में जलता गोवर्धनदास पाठकों को सचेत रहने का संदेश देता है।

- **राजा:**

प्रस्तुत नाटक की कथा को गति प्रदान करनेवाले पात्रों में राजा का चरित्र भी महत्वपूर्ण है। अंधेर नगरी का चौपट राजा अर्थात बुद्धिहीन न्याय व्यवस्था का प्रतीक है जो स्वतंत्रतापूर्व भारत में भारतीयों पर सौंपी जा रही थी। इस अवस्था में शासक वर्ग का जनता के प्रति कोई सरोकार नहीं था। इसका उत्तम उदाहरण है अंधेर नगरी में चित्रित राजा का चरित्र जिसको जनता के न्याय-अन्याय से कोई लेना-देना नहीं है। उसमें न तो किसी की बात को पूर्ण रूप से सुनने का धैर्य है और न ही अपनी बात को जनता

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

तक पहुंचाने का योग्य ढंग । राज्य का मुखिया होने का कोई गुण राजा के चरित्र में नज़र नहीं आता। बुध्दिसंपन्नता तथा राजा का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। शायद यही कारण है कि नाटक का अंत राजा के अंत के साथ ही होता है। बुध्दिहीनता के चलते राजा स्वयं अपने ही द्वारा बिछाएँ जाल में फँस जाता है।

- **नारायणदास:**

महंत के दूसरे तथा अपने गुरु के आदेश का पालन करनेवाले सुलझे हुए शिष्य के रूप में नारायणदाय का चरित्र आलोच्य नाटक में उभरता है। वह गोवर्धनदास की तरह बाज़ार की चकाचौंध से प्रभावित न होकर अपने गुरु द्वारा बताए गए पथ पर चलता है। नारायणदास उन भारतीय युवाओं का प्रतीक है जो अंग्रेज़ी शासन के प्रलोभन का शिकार नहीं हुए और न ही अपने लक्ष्य से भटके बल्कि अपनी बुद्धि का परिचय देते हुए अपने पथ पर डटे रहे। अतः अंधेर नगरी के सभी पात्र कथावस्तु को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने में सहायक है।

देशकाल वातावरण:

देशकाल वातावरण से तात्पर्य नाटक में वर्णित स्थान, काल और परिवेश से है। इस तत्व का उचित प्रयोग नाटक में चित्रित घटनाओं को विश्वसनीयता प्रदान करने में सहायक होता है। देश-काल और वातावरण का योग्य संतुलन ही किसी नाट्य कृति की सफलता का मूलाधार होता है। इस बात को भारतेंदु भली-भाँति जानत थे। देशकाल वातावरण का सटीक प्रयोग प्रस्तुत नाटक को अधिक विश्वसनीयता प्रदान करता है। अंधेर नगरी का रचनाकाल सन् 1881 है। यह अंग्रेज़ी शासन की क्रूरता का काल था। अंग्रेज़ों की शेषिण युक्त नीतियों को आतंक बढ़ता जा रहा था। सामान्य जनता अन्याय, अत्याचार एवं शोका से त्रस्त थी। भारतीय राजा भोगी- विलासी थे। प्रजा के सुख-दुख से उनका कोई सरोकार नहीं था। इन सारी स्थितियों के बीच भारतेंदु ने प्रस्तुत नाटक की रचना करते हुए तत्कालीन विद्रूपताओं को उजागर करने का सराहनीय प्रयास किया है।

अंधेर नगरी में वर्णित प्रत्येक दृश्य देशकाल वातावरण के योग्य प्रयोग का परिचायक है। बाज़ार के दृश्य में चूरन वाले के माध्यम ये तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों की झलक मिलती है -

"चूरन जब से हिंद में आया
इसका धन बल सभी घटाया
चूरन ऐसा हट्टा-कट्टा
कीना दाँत सभी का खट्टा।"[४]

साथ ही अंग्रेज़ी शासनकाल में प्रचलित भ्रष्टाचार, महाजनों की सूदखोरी, पुलिस प्रशासन की विफलता, अंग्रेजो द्वारा भारतीयों का किया जा रहा शोषण आदि सभी का वास्तविक चित्रण पाचकवाले के संवादों में मिलता है-

"चूरन अमले सब जो खावैं
दूनी रिश्वत तुरंत पचावैं
चूरन नाटकवाले खाते
इसकी नकल पचाकर लाते
चूरन् सभी महाजन खाते
जिससे जमा हजम कर जाते
चूरन खावैं एडिटर जात
जिनके पेट नहिं बात

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

चूरन साहब लोग जो खाता
सारा हिंद हजम कर जाता।"[५]

तत्कालीन बनारस में प्रसिद्ध तौकी, मैना नामक महिलाओं का जिक्र भी कथानक को देशकाल से जोडता है -

" चना खावै तौकी मैना
बोलै अच्छा चना चबैना।"[६]

अंधेर नगरी के सभी दृश्य ये देश, काल तथा वातावरण की दृष्टि ये सर्वव्यापी तथा प्रभावी है। प्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा इस संदर्भ में लिखते हैं - "अंधेर नगरी का वातावरण यथार्थ जीवन का ही प्रतिबिंव है। उसके बाज़ार में कबाबवाला, चने जोर गरमवाला, नारंगीवाला, हलवाई, कुंजडिन, मेवा बेचनेवाला, चूरनवाला आदि-आदि उत्तर भारत के किसी शहर से मानो सीधे अंधेर नगरी चले आए है। अंततः कहा जा सकता है कि, अंधेर नगरी में चित्रित देश, काल तथा वातावरण नाटक की विश्वसनीयता तथा प्रभावोत्पादकता बढाने में काल सफल सिद्ध हुए है।

संवाद अथवा कथोपकथन:

नाटक की सफलता उसमें चित्रित संवादों पर निर्भर करती है। पात्रों द्वारा बोले गए संवादों के माध्यम से ही नाटककार अपने विचार पाठकों तक पहुंचाने में सफल होता है। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहने का गुण नाटक के संवाद अथवा भाषा की विशेषता होती है। नाटक में वर्णित संवाद नाटक के कथ्य, पात्र, वातावरण के अनुरूप होने चाहिए। भारतेंदु के मतानुसार - "पात्रों के संवाद के माध्यम से उनके स्वभाव का परिचय पाठकों को होना चाहिए।उनके यह विचार उनके नाटकों में मूर्त रूप धारण करते हैं। भारतेंदु ने प्रस्तुत नाटक में पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के अनुसार संवाद- योजना की है। महंत कम बोलते हैं परंतु उनके संवाद प्रभावी और गंभीर है। उनके संवादों में नीति-कथनों का प्रयोग अधिक दिखाई देता है। जिसके द्वारा उनकी चारित्रिक विशेषताओं को सहजता से समझा जा सकता है। राजा के संवादों से अज्ञान और मूर्खता झलकती है। बाज़ार में तरह- तरह का सामान बेच रहे पात्रों के संवाद द्वारा तत्कालीन परिवेश साकार हो उठता है।

'अंधेर नगरी' में प्रयुक्त संवाद अथवा कथोपकथन में रोचकता का गुण विद्यमान हैं। सभी पात्र नपा-तुला और सटीक बोलते हैं-

गोवर्धनदास: क्यों भाई बनिये। आटा कितने सेर?
बनिया: टके सेर।
गोवर्धनदास: और चावल?
बनिया: टके सेर।
गोवर्धनदास: और चीनी?
बनिया: टके सेर।
गोवर्धनदास: और घी?
बनिया: टके सेर
गोवर्धनदास: सब टके सेर। सचमुच
बनिया: हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूंगा?

आलोच्य नाटक में चित्रित संवादों के माध्यम से नाटक का क्रिया व्यापार तेजी से घटित होता है जिससे पाठक सहजता के जुडा रहता है-

राजा: (नौकर से) कुल्लू बनिया की दीवार को अभी पकड लाओ।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

मंत्री: महाराज, दीवार नहीं लाई जा सकती।

राजा: अच्छा, उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना जो हो उसकी पकड़ लाओ।

मंत्री: महाराज दीवार ईंट चूने की होती है, उसको भाई बेटा नहीं होता।

राजा: "अच्छा कुल्लू बनिये को पकड लाओ।"[७]

अतः छोटे से कलेवर में सिमटा 'अंधेर नगरी' अपने छोटे-छोटे पर परंतु गहरे अर्थ अभिव्यक्त करते संवादों के कारण विशेष उल्लेखनीय बन पड़ा है।

अभिनय तथा रंगमंचीयता:

"अभिनेयता' अर्थात् 'अभिनय' नाटक का वह तत्व है जो नाटक विधा को अन्य गद्य विद्याओं की तुलना में विशेषता प्रदान करता है। अभिनय के माध्यम से ही किसी नाटय रचना को रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। यह नाटक का वह तत्व है जो दर्शकों के अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखता है। किसी नाटक में अभिनय तत्व का योग्य समाहार मंचन की दृष्टि ये अत्यावश्यक होता है। 'अभिनय तथा 'रंगमंचीयता' यह दोनों तत्व परस्पर पूरक है। साथ ही इनका सहसंबंध नाटक के अन्य तत्वों जैसे-कथावस्तु, पात्र अथवा चरित्र, देशकाल वातावरण, संवाद अथवा कथोपकथन आदि सभी से है।

आलोच्य नाटक में भारतेंदु ने अभिनय, दृश्य, स्थान, पात्रों का प्रवेश, प्रस्थान आदि सभी के संबंध में छोटे-छोटे निर्देश कोष्ठक में दिए हैं। जैसे- चौथे दृश्य के आरंभ में राजा, मंत्री और नोकर लोग यथास्थान स्थित हैं- यहाँ पर भारतेंदु ने सभी पत्रों को अपने-अपने स्थान पर बैठने का संकेत दिया है जो अभिनेता तथा निर्देशक दोनों की सहायता करता है। कथावस्तु के अनुसार सीमित दृश्य विधान, पात्र, पात्रों के संवाद आदि सभी प्रस्तुत नाटक की रंगमंचीयता को लचीलापन प्रदान करते हैं।

अंधेर नगरी में चित्रित सभी स्थानों का उल्लेख किया है जो अभिनय तथा मंचन की दृष्टि से सहायक है। साथ ही पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को दर्शाने के लिए जगह-जगह संकेत दिए गए है जो अभिनय की दृष्टि से उपयोगी हैं। इन सभी संकेतों के माध्यम से भारतेंदु ने रंगकर्मियों की परिकल्पना को पर्याप्त अवसर प्रदान किए है। पूर्ण नाटक में ऐसा कोई दृश्य नहीं है जो अभिनय और रंगमंच की दृष्टि से कठिन हो। अत्यंत सरल एवं छोटे कयानक के साथ अपने उद्देश्य की ओर आगे बढता प्रस्तुत नाटक अभिनय तथा रंगमंचीयता की दृष्टि से भी पूर्णतः सफल नाटक है।

भाषा:

'भाषा' तत्त्व को यदि नाटक की आत्मा कहा जाए तो भी आश्चर्य नहीं होगा क्योंकि यही वह बिंदु है जो लेखक तथा पाठक के बीच एक सेतु का काम करता है। भाषा के माध्यम से हो लेखक अपनी रचना के साथ जन-जन तक पहुंचता है। इसीलिए नाटक तथा अन्य विधाओं में भी भाषा का महत्व अधिक हो जाता है। भारतेंदु भाषा के महत्व को भली-भांति समझते थे। उनका मानना था कि नाटक की भाषा में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहने का गुण होना चाहिए। साथ ही नाटक की भाषा, पात्र, देशकाल वातावरण आदि के अनुरुप भाषा प्रयोग एक सफल नाट्यकृति की मांग होती है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

लोककथा से प्रेरित 'अंधेर नगरी' इस नाटक की भाषा में लोकभाषा के सभी गुण देखने को मिलते है। सामान्य व्यवहार की भाषा में लिखे इस नाटक में अर्थ की दृष्टि से विस्तार तथा व्यापकता के दर्शन होते हैं। जैसे-

"सांच कहैं ते पनही खावैं
झूठे बहुविधि पदवी पावैं।"[८]

आलोच्च नाटक में भारतेंदु द्वारा प्रयोग में लाए गए शब्द उनकी नाट्य लेखन प्रतिभा एवं प्रवीणता का परिचय देते हैं। खडीबोली हिंदी के साथ-साथ संस्कृत, ब्रज, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्द प्रयोग से अंधेर नगरी की भाषा प्रभावी बन गई है। साइत, सेर, छन, तमोली, मसखरी, पचलोना जैसे देशज शब्दों का प्रयोग भी भाषाई प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। साथ ही 'कबाब गरमागरम, मसालेदार-खाय यो होंठ चाटैं, न खाय सो जीभ काटैं, 'बच्चा नारायणदास! यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है! देख कुछ भिच्छा उच्छा मिले तो ठाकूर जी को भोग लगे। आदि कथ्य तथा पात्रों के अनुरुप नाट्य भाषा के उत्तम उदाहरण है। अंधेर नगरी की भाषा में लयात्मकता का गुण भी देखने को मिलता है। विशेष कर बाज़ारवाले दृश्य में प्रत्येक पात्र देवारा बोली गयी भाषा में लयात्मकता के दर्शन होते हैं।

मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी प्रसतुत नाटक को विशेषता प्रदान करता है। "जैसे काजी वैसे पाजी" खाय सो होठ चाटैं, न खाय सो जीभ काटैं।" जैसी लोकोक्तियों के साथ-साथ दाँत खट्टे करना, रुपया खराब करना, पेट में बात नहीं पचना, सिर चढकर बोलना आदि मुहावरों के प्रयोग से भाषा में लाक्षणिकता का समावेश हो गया है। वैकुंठ, पितामह, स्मरण, प्रणाम, प्रतिष्ठा जैसे संस्कृत शब्दों के साथ - हज़म हुक्म, अर्ज, माजरा, बेफाइदा, हिंद जैसे अरबी-फारसी शब्दों के मेल से बने संवाद भी प्रस्तुत नाटक को नई ऊंचाई प्रदान करते हैं। भाषा प्रयोग की दृष्टी से 'बाजार' का दृश्य भी अति महत्वपूर्ण है। बाज़ार में अपना सामान बेच रहा हर दुकानदार अपने शब्दों से इस दृश्य को जीवंत कर देता है। व्यापारियों की भाषा में व्यंजना का गुण भरते हुए भारतेंदु ने मानवी जीवना में हस्तक्षेप करते बाज़ार (अर्थ) की ओर संकेत किया है।

"टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था कर दो।"[९]

पात्रानुकुल तथा प्रसंगानुकुल भाषा प्रयोग से प्रस्तुत नाटक प्रत्येक व्यक्ति के मन और मस्तिष्क पर छाप छोडने में सफल सिद्ध हुआ है।

उद्देश्य:

नाट्य लेखन का अंतिम तत्त्व है- उद्देश्य। अपनी रचना के माध्यम से विशिष्ट लक्ष्य की पूर्ति लेखक का दायित्व होता है। भारतेंदु ने लेखकीय दायित्व का निर्वहन बखूबी किया है। वे अपने युग की बिकट स्थितियों तथा उनके कारणों से परिचित थे। समय की मांग को समझते हुए अपनी लेखनी के माध्यम से जन-जागरण का कार्य करते हुए उन्होंने समाज को एक नई दिशा देने का काम किया। छोटी-सी यो कथा के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक चित्र अंकित करने की कोशिश भारतेंदु ने अंधेर नगरी में की है। नाटक का शीर्षक ही में उसमें निहित उद्देश्य की ओर संकेत करता है। अंग्रेज़ी शायन काल भारतीयों के लिए अंधेर नगरी से कम नहीं था। ब्रिटिश शासकों की अन्यायपूर्ण नीतियों से जनता

त्रस्त थी। इसका जीवंत चित्रण भारतेंदु ने प्रस्तुत नाटक में किया है -

"चूरन साहब लोग जो खाता
सारा हिंद हज़म कर जाता।"[१०]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भीषण सामाजिक वास्तविकता, उसके कारणों की खोज तथा उपाय की दिशा में बढ़ने का प्रयास ही 'अंधेर नागरी' के लेखन का प्रमुख उद्देश्य है।

अंततः यह कह सकते है कि, अपनी प्रतिभा तथा कल्पना शक्ति के आधार पर लोक प्रचलित कथा को सर्वथा नवीन रूप देकर युगीन परिस्थितियों को उजागर करने का सराहनीय कार्य भारतेंदु ने आलोच्च नाटक में किया है। कथावस्तु तथा पात्रों के अनुरूप संवाद योजना, देशकाल वातावरण का अतिशय अधिक सटीक संयोजन, स्पष्ट एवं सहज भाषा प्रयोग अंधेर नगरी की प्रमुख विशेषताएं है। भारतेंदु ने उद्देश्य रूपी तत्व को इतनी सुंदरता से बुना है कि यह नाटक काल, स्थान आदि की सीमा को लांघकर सर्वकालिक रूप ग्रहण कर चुका है। अभिनय तथा मंचन की दृष्टि में लचीला होने के कारण अपने रचनाकाल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक रंगकर्मियों ने कई बार इसकी रंगमंचीयता को भी सिद्ध किया है।

संदर्भ:

1. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चंद्र पृ.५६
2. वहीं पृ. ३८
3. वहीं पृ. ४८
4. वहीं पृ. ४२
5. वहीं पृ. ४२,४३
6. वहीं पृ. ३९
7. वहीं पृ. ५२
8. वहीं पृ. ५५
9. वहीं पृ. ४३
10. वहीं पृ. ४३